डॉ. अनिल कुमार दुबे ‘अंशु’ की गजलें

ग़ज़ल -1

सभी कमज़र्फ़ कोशिश कर रहे हैं।
दुआ की रोज बारिश कर रहे हैं।।

धड़ककर दिल यही बस कह रहा है।
यहाँ कुछ लोग साजिश कर रहे हैं।।

सभी छलका रहे थे जाम हर पल।
वही गैरों की' मालिश कर रहे हैं।।

गुनहगारी रगों में भर के' चलते।
वही अब आप नालिश कर रहे हैं।।

ज़माने को नचाकर राज करते।
बढ़ा जब मर्ज वर्जिश कर रहे हैं।।

सियासत में निराले ढंग लेकर।
टिकट पाने की' कोशिश कर रहे हैं।।

ग़ज़ल – 2

सफर तन्हा मे'रा दिल बैठता है।
यहाँ चहुँओर कातिल बैठता है।।

निगहबानी,जरा सी सोच में है।
तभी हर होंठ पे तिल बैठता है।।

जगाकर सीखने की चाह दिल में।
सभी के बीच काबिल बैठता है।।

यहाँ पर कौन अपना है, पराया।
शराफत छोड़ जाहिल बैठता है।।

जमानत दे गया अचके हमारा।
वहाँ गमखोर फ़ाज़िल बैठता है।।

नदी नाले मिलेगें "अंशु " कैसे?
बड़ा मुँहजोर साहिल बैठता है।।

***

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.shabdkrantipatrika.in